शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक विकास एवं उसकी प्रभावशीलता: राजस्थान के विशेष संदर्भ में

Lalita Garg[1], Prof. Dr. Manas Ranjan Panigrahi[2]
[1]*Research Scholar, School of Education, Sangam University, Bhilwara, Rajasthan.*
[2]*Professor & Pro Vice-Chancellor, Sangam University, Bhilwara, Rajasthan.*

सार-**शिक्षक-प्रशिक्षकों का व्यावसायिक विकास शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण आधार है। वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था में हो रहे तीव्र तकनीकी, सामाजिक एवं नीतिगत परिवर्तनों के कारण शिक्षक-प्रशिक्षकों के ज्ञान, कौशल, अनुसंधान क्षमता तथा व्यावसायिक दक्षताओं का निरंतर उन्नयन आवश्यक हो गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान राज्य के शिक्षक-शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक विकास की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना, व्यावसायिक विकास के प्रति उनकी अभिवृत्तियों का अध्ययन करना, व्यावसायिक विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना तथा संस्थागत समर्थन एवं प्रशासनिक नेतृत्व की भूमिका का मूल्यांकन करना है।**

अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण (Descriptive Survey) शोध-विधि का उपयोग किया गया। अध्ययन के लिए राजस्थान के विभिन्न सरकारी एवं निजी शिक्षक-शिक्षा संस्थानों से शिक्षक-प्रशिक्षकों का चयन उपयुक्त प्रतिचयन तकनीक के माध्यम से किया गया। आँकड़ों के संकलन हेतु स्व-निर्मित प्रश्नावली एवं मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन, t-परीक्षण, ANOVA तथा सहसंबंध जैसे उपयुक्त सांख्यिकीय उपायों द्वारा किया गया।

अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि अधिकांश शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक विकास के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है तथा वे प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, अनुसंधान गतिविधियों एवं सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) आधारित शिक्षण के माध्यम से अपनी व्यावसायिक दक्षताओं में वृद्धि करने के प्रति सजग हैं। तथापि अनुसंधान सुविधाओं की सीमित उपलब्धता, वित्तीय संसाधनों का अभाव, कार्यभार की अधिकता, प्रशासनिक सहयोग में असमानता तथा गुणवत्तापूर्ण व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की सीमित उपलब्धता जैसी चुनौतियाँ उनके सतत व्यावसायिक विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि जिन संस्थानों में संस्थागत नेतृत्व, संसाधनों की उपलब्धता, अनुसंधान संस्कृति तथा नवाचारों को प्रोत्साहन प्राप्त है, वहाँ शिक्षक-प्रशिक्षकों का व्यावसायिक विकास अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी पाया गया।

अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि शिक्षक-प्रशिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, अनुसंधान अनुदान, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता, संस्थागत सहयोग, प्रभावी नेतृत्व तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप क्षमता-विकास कार्यक्रमों को सुदृढ़ करना आवश्यक है। यह अध्ययन शिक्षक-शिक्षा संस्थानों, नीति-निर्माताओं, विश्वविद्यालयों तथा शैक्षिक प्रशासकों के लिए उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करता है, जिससे शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक दक्षताओं में वृद्धि कर शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सके।

मुख्य शब्द: **शिक्षक-प्रशिक्षक, व्यावसायिक विकास, शिक्षक-शिक्षा संस्थान, राजस्थान, सतत व्यावसायिक विकास, शिक्षक दक्षता, व्यावसायिक अभिवृत्ति, संस्थागत समर्थन, अनुसंधान संस्कृति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT)।**

I. परिचय

शिक्षा मानवता के सर्वाधिक महत्वपूर्ण दायित्वों में से एक है। यह मनुष्य को ज्ञान, तथ्य, भावनाएँ, समझ, विवेक तथा जीवन-मूल्यों से समृद्ध करने का प्रभावी माध्यम है। प्रसिद्ध विचारक जॉन रस्किन के अनुसार, "शिक्षा का उद्देश्य केवल लोगों को वह सिखाना नहीं है जो वे नहीं जानते, बल्कि उन्हें वह आचरण करना सिखाना है जो वे अभी तक नहीं करते।" इस दृष्टि से शिक्षा को सदैव समाज में व्याप्त असमानताओं, अज्ञानता तथा विभिन्न सामाजिक समस्याओं को कम करने का सार्वभौमिक साधन माना गया है। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न संगठनों, आयोगों तथा नीति-निर्माताओं द्वारा शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर निरंतर बल दिया जाता रहा है।

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रारम्भिक एवं प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण हेतु समय-समय पर अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम संचालित किए गए। विशेष रूप से सर्व शिक्षा अभियान (2001) तथा शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE Act, 2009) के अंतर्गत अनेक महत्त्वपूर्ण योजनाएँ, कार्यक्रम एवं नीतियाँ लागू की गईं, जिनका उद्देश्य प्रत्येक बालक को गुणवत्तापूर्ण एवं समान शिक्षा उपलब्ध कराना था।

सक्रिय शैक्षिक नीतियों के लागू होने से पूर्व भारत साक्षरता के क्षेत्र में अपेक्षाकृत पिछड़ा हुआ था, किन्तु केंद्र एवं राज्य सरकारों के संयुक्त प्रयासों, शिक्षा पर बढ़ते निवेश तथा विशेष रूप से सर्व शिक्षा अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप साक्षरता एवं विद्यालयी शिक्षा की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। [1] शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा प्रदान करने की दिशा में उठाए गए कदमों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक सुदृढ़ एवं समावेशी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है (Meshram, 2015)।

यद्यपि शिक्षा के क्षेत्र में नामांकन एवं पहुँच के स्तर पर उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं, तथापि यह स्पष्ट है कि केवल शिक्षा का विस्तार ही पर्याप्त नहीं है। वास्तविक प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि बच्चों को किस स्तर की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा रही है। इसलिए वर्तमान समय में शिक्षा की गुणवत्ता, प्रभावशीलता तथा अधिगम परिणामों में सुधार पर विशेष बल दिया जा रहा है, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा सके।

शिक्षा तथा विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता का आधार शिक्षकों एवं शिक्षण व्यवसाय की प्रभावशीलता पर निर्भर करता है। इसलिए किसी भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था के केंद्र में शिक्षक तथा शिक्षण पेशा ही होता है। शिक्षण व्यवसाय के महत्व को रेखांकित करते हुए भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था, "शिक्षण एक अत्यंत महान पेशा है, जो किसी व्यक्ति के चरित्र, क्षमता और भविष्य का निर्माण करता है। [2] यदि लोग मुझे एक अच्छे शिक्षक के रूप में याद रखें, तो यह मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान होगा।"

इसी संदर्भ में भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं महान शिक्षाविद् डॉ. जाकिर हुसैन ने राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण करने के उपरांत अपने संबोधन में कहा था, "मैं मानता हूँ कि शिक्षा राष्ट्रीय उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रमुख साधन है और किसी राष्ट्र की शिक्षा की गुणवत्ता उसके राष्ट्रीय विकास की गुणवत्ता से पृथक नहीं हो सकती।" इसी प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी अपने कार्यकाल के प्रारंभ में शिक्षकों की भूमिका को अत्यंत महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा था कि, "राष्ट्रपति के रूप में मैं पूरे देश में लाखों नए शिक्षकों की भर्ती एवं उनके सशक्तीकरण के लिए अभियान प्रारंभ करूँगा, क्योंकि किसी भी शिक्षा प्रणाली का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व कक्षा के सामने खड़ा शिक्षक होता है। अब समय आ गया है कि शिक्षण को उसी

सम्मानित पेशे के रूप में स्वीकार किया जाए, जिसका वह वास्तविक रूप से अधिकारी है।"

किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं समग्र विकास उसकी शिक्षा प्रणाली तथा उससे संबंधित नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करता है। इसके लिए सुविचारित योजना, दूरदर्शिता तथा समर्पित प्रयासों की आवश्यकता होती है। [3] इस संपूर्ण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है, क्योंकि वही शिक्षा प्रणाली का प्रमुख आधार है, जो विद्यार्थियों को सफलता एवं राष्ट्र निर्माण की दिशा में अग्रसर करता है।

भारत के अनेक महान विचारकों एवं शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षक की भूमिका एवं उत्तरदायित्वों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का मानना था कि, "यदि किसी राष्ट्र को भ्रष्टाचार-मुक्त और श्रेष्ठ विचारों वाला राष्ट्र बनाना है, तो समाज के तीन प्रमुख सदस्य—पिता, माता और शिक्षक—इस परिवर्तन के सबसे बड़े माध्यम हैं।" वहीं डॉ. जाकिर हुसैन ने शिक्षक को "मूल्यों का संरक्षक" बताया तथा कहा कि "शिक्षक का पवित्र दायित्व है कि वह अपने व्यक्तित्व, आचरण एवं आदर्शों के माध्यम से अपने विद्यार्थियों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास करे।"

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित महान साहित्यकार एवं शिक्षाविद् रवीन्द्रनाथ ठाकुर का मत था, "एक दीपक दूसरे दीपक को तब तक प्रकाशित नहीं कर सकता, जब तक वह स्वयं प्रज्वलित न हो।" उन्होंने आगे कहा कि "जो शिक्षक अपने विषय के प्रति उत्साह, जिज्ञासा और जीवंतता खो देता है तथा अपने विद्यार्थियों के साथ आत्मीय संबंध स्थापित नहीं कर पाता, वह केवल उनके मस्तिष्क में सूचनाएँ भर सकता है, किंतु उन्हें प्रेरित नहीं कर सकता।" [4] यह विचार स्पष्ट करता है कि एक प्रभावी शिक्षक केवल ज्ञान का संप्रेषक नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, मूल्यों और जीवन-दृष्टि का निर्माण करने वाला प्रेरणास्रोत भी होता है।

महात्मा गांधी ने यंग इंडिया (जनवरी, 1924) में जोर देकर कहा कि, "शिक्षक स्वयं उन गुणों का धारक होना चाहिए जिन्हें वह छात्रों में विकसित करना चाहता है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षक को स्वयं इन गुणों का अभ्यास करना चाहिए, अन्यथा उसके शब्दों का कोई प्रभाव नहीं होगा।" [5] उन्होंने यह भी कहा कि, "शिक्षक को छात्रों के साथ हृदय से हृदय का संबंध स्थापित करने में सक्षम होना चाहिए…" (यंग इंडिया, अप्रैल, 1929)। आगे उन्होंने स्पष्ट किया कि, "शिक्षक और शिक्षित को एक-दूसरे के साथ निरंतर संवाद में रहना चाहिए। वास्तव में, शिक्षकों को छात्रों के मस्तिष्क की बजाय उनके हृदय को आकार देना होता है।"

शिक्षक के नैतिक कर्तव्यों के संबंध में श्री अरविंदो कहते हैं, "शिक्षक कोई उपदेशक या कर्तव्यनिष्ठ अधीक्षक नहीं है, वह एक सहायक और मार्गदर्शक है। [5] उसका कार्य सुझाव देना है, थोपना नहीं। वह छात्रों को ज्ञान प्रदान नहीं करता; वह उन्हें दिखाता है कि वे स्वयं ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकते हैं।" [6] वे आगे कहते हैं कि शिक्षक "भीतर छिपे ज्ञान को बाहर नहीं निकालता; वह केवल उन्हें दिखाता है कि यह कहाँ है और इसे सतह पर लाने की आदत कैसे विकसित की जा सकती है।"

अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा विकास आयोग (UNESCO, 1972) ने कहा कि, "शिक्षक का कर्तव्य ज्ञान को सिखाने से कम और सोच को प्रोत्साहित करने से अधिक होता जा रहा है। औपचारिक कार्यों को छोड़कर उन्हें अधिक से अधिक सलाहकार, संवाद करने वाला साथी तथा ऐसा व्यक्ति बनना होगा जो तैयार-तैयार सत्य देने की बजाय विरोधाभासी तर्कों की खोज में सहायता करे। [6] उन्हें रचनात्मक एवं उत्पादक गतिविधियों, संवाद, चर्चा, प्रोत्साहन, समझ और उत्साहवर्धक प्रक्रियाओं के लिए अधिक समय और ऊर्जा समर्पित करनी होगी।"

II. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

डोनाल्डसन (2011) [1] ने अपने अध्ययन "स्कॉटलैंड का भविष्य: शिक्षण में स्कॉटलैंड के शैक्षणिक परिदृश्य और शिक्षकों की भूमिका का विश्लेषण" में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि शिक्षा में सुधार तथा भविष्य की आवश्यकताओं की तैयारी मुख्यतः शिक्षकों के व्यावसायिक विकास, प्रभावी नीतिनिर्माण एवं संस्थागत समर्थन पर निर्भर करती है। इस अध्ययन में उच्च शिक्षा एवं विद्यालयी शिक्षा दोनों स्तरों पर शिक्षक पेशे की रणनीतिक एवं निर्णायक भूमिका को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है।

ड्रेज (2010) [2] ने "व्यावसायिक विकास: इलिनॉयस करियर और तकनीकी शिक्षा शिक्षकों के लिए निहितार्थ" विषय पर किए गए अपने शोध में यह पाया कि जो शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, उनकी शिक्षण क्षमता, पेशेवर दक्षता तथा करियर उन्नति में उल्लेखनीय सुधार होता है। यह अध्ययन विशेष रूप से तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में सतत व्यावसायिक विकास के महत्व को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

अर्ली और बब्ब (2004) [3] ने सतत व्यावसायिक विकास एवं नेतृत्व तथा प्रबंधन पर आधारित अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि शिक्षक विकास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता तब अधिक होती है जब उन्हें संस्थागत नेतृत्व, प्रभावी प्रबंधन रणनीतियों तथा सहयोगात्मक कार्य वातावरण का समर्थन प्राप्त होता है। यह अध्ययन यह समझने में सहायक है कि शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में नेतृत्व एवं प्रबंधन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

एड्युटोपिया (2008) [4] ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि शिक्षक विकास अत्यंत आवश्यक प्रक्रिया है, क्योंकि शिक्षक का सतत व्यावसायिक विकास सीधे रूप से छात्रों की अधिगम गुणवत्ता एवं शैक्षिक परिणामों को प्रभावित करता है। इस शोध में शिक्षा प्रणाली में शिक्षक प्रशिक्षण तथा व्यावसायिक विकास की अनिवार्यता पर विशेष बल दिया गया है।

इवांस (2008) [5] ने पेशेवरता, व्यावसायिकता और शिक्षा पेशेवरों का विकास विषय पर अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि शिक्षण पेशे में पेशेवरता एवं व्यावसायिक आचरण का पालन अनिवार्य है। साथ ही, शिक्षकों का सतत विकास उनकी पेशेवर दक्षता, नैतिकता एवं शैक्षणिक गुणवत्ता को सुदृढ़ करता है (DOI: 10.1111/j.1467-8527.2007.00392.x)।

फर्नांडेज़-मानज़ानाल एट अल. (2015) [6] ने प्रारंभिक व्यावसायिक विकास में पर्यावरणीय व्यवहार विषय पर अध्ययन किया। उनके निष्कर्षों के अनुसार, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पर्यावरणीय जागरूकता एवं व्यवहार को सम्मिलित करने से शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता तथा उनके समग्र व्यावसायिक विकास में सकारात्मक सुधार होता है। यह अध्ययन शिक्षक विकास की प्रक्रिया में पर्यावरणीय कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट रूप से उजागर करता है (DOI: 10.1016/j.jclepro.2015.08.086) ।

फिशमैन एट अल. (2019) [7] ने अभ्यास-आधारित व्यावसायिक शिक्षण कार्यक्रमों का अध्ययन किया। उनके अनुसार, जब शिक्षक व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं वास्तविक कक्षा अनुभव पर आधारित कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, तो उनकी शिक्षण दक्षता में वृद्धि होती है तथा छात्रों के अधिगम परिणामों में भी सुधार देखा जाता है। यह शोध व्यावहारिक अनुभव एवं सतत व्यावसायिक विकास के महत्व को रेखांकित करता है (DOI: 10.1080/1046560X.2018.1532260) ।

फ्रंटियर्स इन एजुकेशन (2024) [8] में प्रकाशित अध्ययन में सक्रिय शिक्षण के समाकलन हेतु कार्यस्थल-आधारित सतत व्यावसायिक विकास पर प्रकाश डाला गया है। निष्कर्षों के अनुसार, कार्यस्थल पर आधारित व्यावसायिक विकास अनुभव शिक्षकों को सक्रिय शिक्षण रणनीतियों को

अपनाने तथा विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाने में सक्षम बनाते हैं। यह अध्ययन व्यावसायिक विकास के समग्र एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण के महत्व को स्पष्ट करता है (DOI: 10.3389/feduc.2024.1407542) ।

गैंसर (2000) [9] ने व्यावसायिक विकास के दीर्घकालिक एवं महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण पर अध्ययन किया। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि यदि शिक्षक व्यावसायिक विकास के लिए स्पष्ट एवं दीर्घकालिक लक्ष्य अपनाते हैं, तो उनके पेशेवर कौशल, नैतिकता तथा शिक्षण गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार होता है। यह शोध शिक्षक विकास के रणनीतिक पक्ष को उजागर करता है (DOI: 10.1108/03090590010377269) ।

गैजसेल एट अल. (2009) [10] ने शिक्षक के मनोवैज्ञानिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन किया। उनके अनुसार, शिक्षक की मनोवैज्ञानिक स्थिति, प्रेरणा एवं विश्वास उनके व्यावसायिक विकास तथा शिक्षण प्रभावशीलता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन शिक्षक विकास में मानसिक एवं भावनात्मक कारकों के महत्व को रेखांकित करता है (DOI: 10.1086/593940) ।

जेल्डेनहुइस एवं ऊस्टहुइजेन (2015) [11] ने सतत व्यावसायिक विकास में शिक्षकों की भागीदारी को प्रभावित करने वाली चुनौतियों का अध्ययन किया। उनके निष्कर्षों के अनुसार, शिक्षक सहभागिता पर व्यक्तिगत, संस्थागत तथा सामाजिक कारकों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की सफलता सुनिश्चित करने के लिए उनकी बाधाओं की पहचान करना तथा उन्हें दूर करना अत्यंत आवश्यक है (DOI: 10.1016/j.tate.2015.07.006)।

गिब्स (2011) [12] ने बड़ी कक्षाओं में प्रभावी शिक्षण पर शोध किया। उनके अनुसार, बड़े छात्र समूहों में शिक्षण की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए सुव्यवस्थित योजना, सक्रिय छात्र सहभागिता तथा उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों का प्रभावी उपयोग आवश्यक है। यह अध्ययन बड़े वर्गों में शिक्षण प्रबंधन तथा प्रभावी शिक्षण तकनीकों के महत्व को रेखांकित करता है।

गिल एवं कौर (2017) [13] ने वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन किया। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता उनके पेशेवर विकास, कार्य संतोष तथा शिक्षा की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। यह शोध शिक्षक प्रतिबद्धता एवं संगठनात्मक प्रदर्शन के मध्य संबंध को समझने में सहायक है।

भारत सरकार (2014) [14] ने शिक्षा पर बजटीय व्यय का विश्लेषण प्रस्तुत किया। अध्ययन में यह पाया गया कि उच्च एवं माध्यमिक शिक्षा में किए जाने वाले बजटीय प्रावधान तथा वित्तीय नीतियाँ शिक्षा की गुणवत्ता एवं उपलब्ध संसाधनों को सीधे प्रभावित करती हैं। यह रिपोर्ट शिक्षा नीति निर्माण तथा संसाधन आवंटन के महत्व को स्पष्ट रूप से उजागर करती है।

हार्ग्रिव्स (2000) [15] ने पेशेवरता एवं व्यावसायिक शिक्षण के चार युगों का विश्लेषण किया। उनके अनुसार, शिक्षक पेशे के विकास के विभिन्न चरणों ने समय के साथ शिक्षकों की भूमिका, व्यावसायिक विकास तथा शैक्षणिक गुणवत्ता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। यह अध्ययन शिक्षण पेशे के ऐतिहासिक एवं सैद्धांतिक दृष्टिकोण को समझने में सहायक सिद्ध होता है (DOI: 10.1080/713698714) ।

हातिम एवं शाकिर (2021) [16] ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन किया। उनके निष्कर्षों के अनुसार, शिक्षकों की पेशेवर प्रतिबद्धता उनके कार्य संतोष, व्यावसायिक विकास तथा शैक्षणिक गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। यह अध्ययन शिक्षक प्रतिबद्धता को प्रभावित करने वाले विभिन्न व्यक्तिगत एवं संगठनात्मक कारकों को भी स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

हेबा अल-ओमारी एट अल. (2024) [17] ने सतत व्यावसायिक विकास गतिविधियों से प्राप्त ज्ञान को व्यवहार में लागू करने पर शोध किया। उनके अनुसार, व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में भाग लेने वाले शिक्षक अपने अर्जित ज्ञान एवं कौशल को सीधे कक्षा शिक्षण में लागू करने में सक्षम होते हैं, जिससे छात्रों की अधिगम गुणवत्ता में सुधार होता है। यह अध्ययन सतत व्यावसायिक विकास की प्रभावशीलता को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है (DOI: 10.1186/s12909-024-05108-7)।

इंगर्सोल एवं मेरिल (2011) [18] ने शिक्षण को एक पेशे के रूप में उसकी स्थिति पर अध्ययन किया। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि शिक्षक पेशे की सामाजिक मान्यता, नौकरी की स्थिरता तथा पेशेवर मानदंड शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं शिक्षण प्रभावशीलता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। यह शोध शिक्षण पेशे की सामाजिक एवं संगठनात्मक भूमिका को समझने में सहायक है।

जैन (2013) [19] ने उच्च शिक्षा के अकादमिकों के दृष्टिकोण एवं कार्य प्रतिबद्धता का अध्ययन किया। उनके निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि अकादमिक दृष्टिकोण एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता परस्पर संबंधित हैं तथा यह विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षण एवं शोध की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन उच्च शिक्षा में शिक्षक विकास एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के संबंध को स्पष्ट करता है।

जोसेफ (2003) [20] ने प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर अध्ययन किया। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि प्राथमिक शिक्षकों की पेशेवर प्रतिबद्धता उनके शिक्षण व्यवहार, कार्य संतोष तथा विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। यह अध्ययन शिक्षक पेशे में प्रतिबद्धता के महत्व को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

III. अनुसंधान विधि एवं प्रक्रिया

यह अध्याय अध्ययन के पद्धतिगत पक्षों पर चर्चा करता है। इसमें अध्ययन की रूपरेखा, अनुसंधान अभिकल्पना, अनुसंधान विधियाँ, अध्ययन की जनसंख्या तथा नमूने का वर्णन किया गया है। [7] इस अध्याय में नमूना चयन तकनीकों, आँकड़ा संकलन के उपकरणों, आँकड़ा संकलन की प्रक्रिया तथा आँकड़ों के विश्लेषण हेतु अपनाई गई सांख्यिकीय तकनीकों का भी वर्णन किया गया है।

IV. अनुसंधान अभिकल्पना एवं विधि

अनुसंधान अभिकल्पना एक व्यापक रूपरेखा के रूप में कार्य करती है, जो विशिष्ट अनुसंधान प्रश्नों अथवा समस्याओं के समाधान हेतु प्रयुक्त पद्धतिगत संरचना एवं प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है। यह एक व्यवस्थित कार्ययोजना प्रदान करती है, जो शोधकर्ता को परिकल्पनाओं के निर्माण से लेकर आँकड़ों के संकलन, विश्लेषण तथा व्याख्या तक मार्गदर्शन प्रदान करती है (Kerlinger, 1986; Kumar, 2011)। एक उपयुक्त अनुसंधान अभिकल्पना निष्कर्षों की वैधता, विश्वसनीयता तथा वस्तुनिष्ठता को बढ़ाती है तथा त्रुटियों एवं अस्पष्टताओं को न्यूनतम करती है।

वर्तमान अध्ययन की प्रकृति एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान अभिकल्पना (Descriptive Survey Research Design) को अपनाया है। [8] यह अभिकल्पना उस स्थिति में उपयुक्त मानी जाती है जब उद्देश्य बिना किसी चर में हेरफेर किए वर्तमान परिस्थितियों अथवा घटनाओं का अवलोकन, वर्णन तथा व्याख्या करना हो। वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान विशेष रूप से शैक्षिक प्रक्रियाओं, संस्थागत संरचनाओं तथा हितधारकों की धारणाओं का उनके स्वाभाविक परिवेश में अध्ययन करने के लिए उपयुक्त है।

वर्तमान अध्ययन की आवश्यकताओं तथा अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। इसके अतिरिक्त, माध्यमिक स्तर पर शिक्षक शिक्षकों के व्यावसायिक विकास संबंधी प्रक्रियाओं का गुणात्मक रूप से गहन अध्ययन करने के लिए अन्वेषक द्वारा साक्षात्कार भी आयोजित किया गया। [9] वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर शिक्षक शिक्षकों के व्यावसायिक विकास का आकलन करना था। राजस्थान के 3 जिलों की 20 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के संकाय सदस्यों से विभिन्न उपकरणों एवं तकनीकों के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया। अतः वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया, क्योंकि यह राजस्थान की शिक्षक शिक्षा संस्थाओं में प्रचलित क्षेत्रीय प्रक्रियाओं के अनुरूप है।

V. जनसंख्या एवं नमूना

अध्ययन की जनसंख्या

अनुसंधान में "जनसंख्या" शब्द से आशय उन सभी व्यक्तियों, संस्थानों, घटनाओं अथवा दस्तावेजों के समग्र समूह से होता है, जो अध्ययन के उद्देश्यों से संबंधित विशिष्ट मानदंडों को पूरा करते हैं। [10] यह उस व्यापक समूह का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे नमूना चयनित किया जाता है तथा जिसके लिए अध्ययन के निष्कर्षों का सामान्यीकरण किया जाता है।

वर्तमान अध्ययन के लिए जनसंख्या में राजस्थान राज्य के माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षक शिक्षकों को सम्मिलित किया गया, जो बैचलर ऑफ एजुकेशन (B.Ed.) तथा मास्टर ऑफ एजुकेशन (M.Ed.) कार्यक्रम संचालित करते हैं। ये शिक्षक शिक्षाविद् विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभागों से संबंधित, पुरुष एवं महिला दोनों होंगे तथा उनके अनुभव की अवधि भी भिन्न-भिन्न होगी।

नमूना एवं नमूना चयन प्रक्रिया

वर्तमान अध्ययन के लिए नमूने में राजस्थान के 3 जिलों की 20 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं से 175 शिक्षक शिक्षकों तथा 20 विभागाध्यक्षों/प्राचार्यों को सम्मिलित किया जाएगा। [11] इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अन्वेषक द्वारा निम्नलिखित नमूना चयन तकनीकों का उपयोग किया जाएगा:

- तीन जिलों (भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर) का चयन सुविधा आधारित नमूना चयन (Convenience Sampling) के माध्यम से किया जाएगा, क्योंकि अन्वेषक भीलवाड़ा में निवास करता है, जिससे अध्ययन हेतु पहुँच आसान होगी।
- 20 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं का चयन सरल यादृच्छिक नमूना चयन विधि (Simple Random Sampling Procedure) द्वारा किया जाएगा।
- 20 विभागाध्यक्षों/प्राचार्यों का चयन उपलब्ध नमूना चयन (Available Sampling) के माध्यम से किया जाएगा, क्योंकि 20 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अधिकतम 20 विभागाध्यक्ष/प्राचार्य होंगे।
- 175 शिक्षक शिक्षकों का चयन आकस्मिक एवं संयोगात्मक नमूना चयन तकनीकों (Incidental and Accidental Sampling Techniques) के माध्यम से किया जाएगा, क्योंकि अन्वेषक पूर्व सूचना देकर संस्थानों का भ्रमण करेगा, फिर भी शिक्षक शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित होना एक महत्वपूर्ण विषय रहेगा। [12] यादृच्छिक नमूना चयन के उपयोग से अनुसंधान की वस्तुनिष्ठता एवं वैधता में भी वृद्धि होती है।

आँकड़ा संकलन उपकरण

प्रत्येक विधि में आँकड़ों के संकलन हेतु विभिन्न उपकरण एवं तकनीकों का उपयोग किया जाता है। आँकड़े प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष स्रोतों से प्राप्त किए जाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आँकड़े पर्याप्त, विश्वसनीय एवं

वैध होने चाहिए। [13] इन बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने व्यावसायिक विकास की धारणा, प्रक्रियाओं तथा उससे संबंधित कारकों का मापन करने हेतु डॉ. रवि रंजन कुमार (2018) द्वारा अनुकूलित धारणा मापनी, प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग करने का निर्णय लिया। निम्नलिखित उपकरण डॉ. रवि रंजन कुमार (2018) द्वारा निर्मित एवं विकसित किए गए थे तथा अन्वेषक द्वारा उपयोग हेतु अपनाए/अनुकूलित किए गए:

1. शिक्षक शिक्षकों की व्यावसायिक विकास संबंधी धारणा का अध्ययन करने हेतु धारणा मापनी।
2. व्यावसायिक विकास प्रक्रियाओं के परीक्षण हेतु शिक्षक शिक्षकों के लिए प्रश्नावली।
3. शिक्षक शिक्षकों तथा विभागाध्यक्ष/प्राचार्य के लिए जाँच सूची, जिसके माध्यम से शिक्षक शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहित करने वाले विभिन्न कारकों का पता लगाया जा सके।
4. विभागाध्यक्षों/प्राचार्यों तथा शिक्षक शिक्षकों के लिए साक्षात्कार अनुसूची, जिसके माध्यम से शिक्षक शिक्षा संस्थानों में व्यावसायिक विकास का परीक्षण किया जा सके।

इन उपकरणों की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए शोधकर्ता द्वारा प्रारंभिक परीक्षण (Pilot Test) किया गया तथा पूर्ण स्तर पर आँकड़ा संकलन से पूर्व उनकी विश्वसनीयता एवं प्रत्यक्ष वैधता (Face Validity) स्थापित की गई।

VI. विश्लेषण एवं व्याख्या

समग्र रूप से, आँकड़े यह दर्शाते हैं कि शिक्षक-शिक्षक मुख्यतः शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता, विज्ञान शिक्षा, समावेशी शिक्षा तथा व्यावसायिक विकास से सीधे संबंधित अनुसंधान क्षेत्रों की ओर अधिक उन्मुख हैं, जबकि शैक्षिक नीति सुधारों तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा जैसे क्षेत्रों पर तुलनात्मक रूप से कम ध्यान दिया जाता है।

तालिका 1: व्यावसायिक विकास हेतु शिक्षक-शिक्षकों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र. सं.	श्रेणियाँ	आवृत्ति	प्रतिशत
1	अनुसंधान उपकरणों (Research Tools) का अभिकल्पन एवं विकास	47	27
2	विज्ञान किट एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) का उपयोग	19	11
3	शिक्षक-शिक्षकों की आईसीटी (ICT) क्षमता निर्माण	54	31
4	ऑनलाइन अधिगम, ई-लर्निंग एवं ई-गवर्नेंस का विकास	30	17
5	शिक्षा में कंप्यूटर तथा एसपीएसएस (SPSS) जैसे सॉफ्टवेयर का उपयोग	35	20
6	माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों हेतु मार्गदर्शन एवं परामर्श (Guidance and Counselling) / शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) संबंधी प्रशिक्षण	40	23
7	प्रभावी क्रियान्वयन हेतु संसाधन सामग्री का विकास	49	28
8	एम. एससी. -एम.एड., द्विवर्षीय एम.एड., बी.एड. तथा एकीकृत बी.एड. -एम.एड. पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम (Syllabus) निर्माण	28	16
9	क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research)	49	28
10	विषय-वस्तु एवं शिक्षणशास्त्र समृद्धि कार्यक्रम (Content-cum-Pedagogy Enrichment Programmes)	26	15
11	सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation - CCE)	16	9

शिक्षक-शिक्षकों द्वारा अपने व्यावसायिक विकास एवं शैक्षणिक समृद्धि के लिए आयोजित विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रस्तुत करती है। प्राप्त आँकड़े दर्शाते हैं कि शिक्षक-शिक्षकों ने अनुसंधान, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT), पाठ्यक्रम विकास, शिक्षणशास्त्र, मार्गदर्शन एवं परामर्श तथा मूल्यांकन संबंधी प्रथाओं से जुड़े विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सक्रिय रूप से आयोजन किया है। [14] ये प्रशिक्षण कार्यक्रम व्यावसायिक दक्षता, शिक्षण प्रभावशीलता तथा संस्थागत विकास को सुदृढ़ बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं।

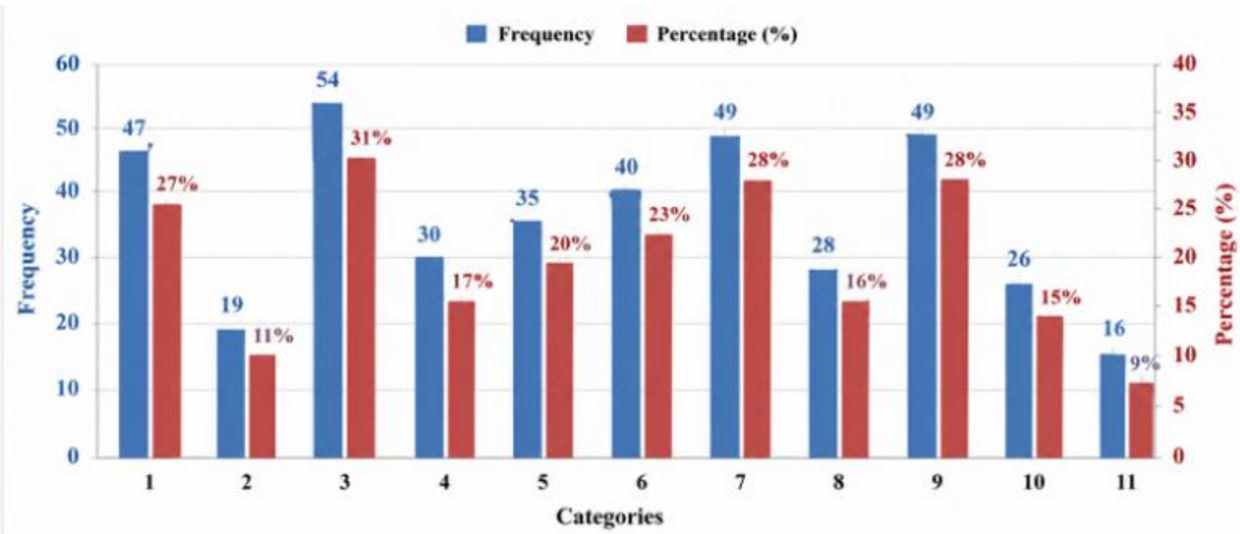

चित्र 1: व्यावसायिक विकास हेतु शिक्षक-शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन

विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक प्रतिशत (31%) उत्तरदाताओं ने शिक्षक-शिक्षकों की आईसीटी (ICT) क्षमता निर्माण से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। यह निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के बढ़ते महत्त्व को दर्शाता है तथा समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक-शिक्षकों के लिए डिजिटल दक्षता की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

प्रभावी क्रियान्वयन हेतु संसाधन सामग्री के विकास तथा क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research) से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन प्रत्येक श्रेणी में 28 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा किया गया। [15] इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक-शिक्षक व्यावहारिक एवं अनुसंधान-आधारित दृष्टिकोणों के माध्यम से कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं, शिक्षण प्रभावशीलता तथा समस्या-समाधान कौशलों में सुधार को विशेष महत्त्व देते हैं।

अनुसंधान उपकरणों के अभिकल्पन एवं विकास से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम 27 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा आयोजित किए गए। यह इंगित करता है कि शिक्षक-शिक्षक गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अनुसंधान संचालित करने तथा शोध-संबंधी दक्षताओं को विकसित करने के लिए अनुसंधान पद्धति एवं उपकरण निर्माण के महत्त्व को स्वीकार करते हैं।

लगभग 23 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए मार्गदर्शन एवं परामर्श तथा शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। [16] यह दर्शाता है कि शिक्षक-शिक्षक केवल अपने व्यावसायिक विकास तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि विद्यालयी शिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में भी सक्रिय योगदान प्रदान करते हैं।

शिक्षा में कंप्यूटर के उपयोग तथा एसपीएसएस (SPSS) जैसे सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा किया गया। इससे संकेत मिलता है कि शैक्षिक अनुसंधान, आँकड़ों के विश्लेषण तथा शैक्षणिक प्रबंधन के लिए आवश्यक तकनीकी एवं सांख्यिकीय उपकरणों के उपयोग में उनकी सहभागिता मध्यम स्तर की है।

ऑनलाइन अधिगम, ई-लर्निंग तथा ई-गवर्नेंस के विकास से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा आयोजित किए गए। [17] यह डिजिटल शिक्षा प्रणाली एवं ऑनलाइन शैक्षणिक प्रशासन के प्रति बढ़ती रुचि को दर्शाता है, यद्यपि यह प्रतिशत यह भी संकेत देता है कि इस प्रकार की पहलें अभी विकासशील अवस्था में हैं।

इसी प्रकार, 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने एम.एससी.-एम.एड., द्विवर्षीय एम.एड., बी.एड. तथा एकीकृत बी.एड.-एम.एड. पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम विकास से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया। यह निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में पाठ्यचर्या नियोजन एवं शैक्षणिक पुनर्संरचना में शिक्षक-शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है।

विषय-वस्तु एवं शिक्षणशास्त्र समृद्धि कार्यक्रम (Content-cum-Pedagogy Enrichment Programmes) का आयोजन 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा किया गया, जो विषयगत ज्ञान एवं शिक्षण दक्षता के समवर्ती विकास पर मध्यम स्तर के बल को दर्शाता है।

केवल 11 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने विज्ञान किट एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) के उपयोग से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया। [18] यह अपेक्षाकृत कम प्रतिशत इस बात का संकेत हो सकता है कि व्यावहारिक एवं प्रयोगशाला-आधारित शिक्षण दृष्टिकोणों को संस्थागत स्तर पर अपेक्षित महत्त्व नहीं दिया जा रहा है।

सबसे कम आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation - CCE) से संबंधित थे, जिनकी सूचना केवल 9 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा दी गई। यह शिक्षक शिक्षा की प्रथाओं में मूल्यांकन एवं आकलन सुधारों के प्रति अपेक्षाकृत सीमित सहभागिता को दर्शाता है।

समग्र रूप से, आँकड़े यह संकेत देते हैं कि शिक्षक-शिक्षक अपने व्यावसायिक विकास के लिए मुख्यतः आईसीटी क्षमता निर्माण, अनुसंधान-उन्मुख गतिविधियों तथा संसाधन सामग्री के विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि मूल्यांकन सुधारों एवं विज्ञान-आधारित व्यावहारिक शिक्षण कार्यक्रमों पर तुलनात्मक रूप से कम बल दिया जाता है।

तालिका 2: व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रमों में शिक्षक-शिक्षकों की सहभागिता

क्र. सं.	श्रेणियाँ	आवृत्ति	प्रतिशत
1	21 दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (मनोविज्ञान, आईसीटी, शिक्षा, भौतिकी, गणित एवं सामाजिक विज्ञान)	105	60
2	अभिमुखीकरण कार्यक्रम	88	50
3	प्रशिक्षण एवं संकाय विकास कार्यक्रम (Faculty Development Programme)	81	46
4	आईसीएसएसआर (ICSSR) अनुसंधान पद्धति (Research Methodology) कार्यक्रम	42	24
5	एनसीईआरटी/एससीईआरटी (NCERT/SCERT) प्रशिक्षण कार्यक्रम	28	16
6	पुनश्चर्या-सह-अभिमुखीकरण कार्यक्रम	21	12
7	एसपीएसएस (SPSS) के माध्यम से सांख्यिकीय आँकड़ों का विश्लेषण	21	12

विभिन्न व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रमों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षक-शिक्षकों की सहभागिता को प्रस्तुत करती है। [19] प्राप्त आँकड़े दर्शाते हैं कि शिक्षक-शिक्षकों ने अपनी शिक्षण दक्षताओं, विषयगत ज्ञान, अनुसंधान कौशलों तथा व्यावसायिक कार्यकुशलता को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से विभिन्न शैक्षणिक एवं व्यावसायिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से सहभागिता की है।

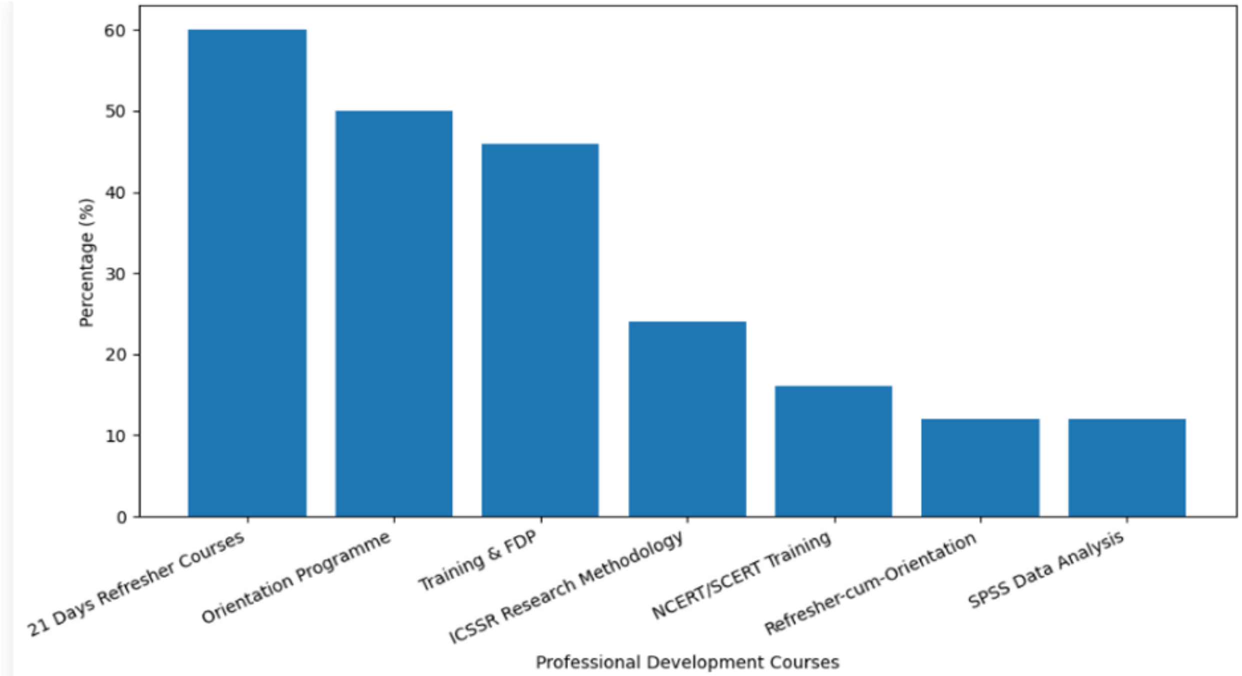

चित्र 2: व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रमों में शिक्षक-शिक्षकों की सहभागिता

विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक प्रतिशत (60%) उत्तरदाताओं ने 21 दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों में सहभागिता की, जो मनोविज्ञान, आईसीटी, शिक्षा, भौतिकी, गणित एवं सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों से संबंधित थे। [20] यह इंगित करता है कि पुनश्चर्या पाठ्यक्रम शिक्षक-शिक्षकों के बीच सर्वाधिक लोकप्रिय व्यावसायिक विकास कार्यक्रम हैं। ऐसे पाठ्यक्रम विषयगत ज्ञान, शिक्षणशास्त्रीय दृष्टिकोणों तथा शिक्षा के क्षेत्र में नवीनतम विकासों को अद्यतन करने के अवसर प्रदान करते हैं।

VII. प्रमुख निष्कर्ष, भावी अध्ययन एवं निष्कर्ष

1. शिक्षक-शिक्षकों ने व्यावसायिक विकास के प्रति अत्यंत सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया तथा इसे व्यावसायिक दक्षता, नैतिक मूल्यों, चिंतनशील सोच एवं नेतृत्व गुणों के विकास के लिए अनिवार्य माना।
2. व्यावसायिक विकास को एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखा गया, जो ज्ञानवर्धन, व्यावसायिक उन्नति तथा शैक्षणिक प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है।
3. शैक्षणिक चर्चाएँ, सहकर्मी सहभागिता, टीम-कार्य तथा सहयोगात्मक अधिगम शिक्षक-शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के महत्वपूर्ण घटकों के रूप में उभरकर सामने आए।
4. पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों (Refresher Courses), अभिमुखीकरण कार्यक्रमों (Orientation Programmes), संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं तथा संकाय विकास कार्यक्रमों (Faculty Development Programmes) में सहभागिता को व्यावसायिक विकास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण गतिविधियों में से एक माना गया।

5. शिक्षक-शिक्षकों ने शोध-पत्रों के प्रकाशन, पुस्तकों के लेखन, संपादित पुस्तकों में अध्यायों के योगदान तथा शोधार्थियों के मार्गदर्शन जैसी शोध गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी की, जिससे उनकी व्यावसायिक पहचान एवं शोध संबंधी दक्षता सुदृढ़ हुई।
6. संसाधन व्यक्ति (Resource Person), मुख्य वक्ता (Keynote Speaker) तथा कार्यशाला संचालक (Workshop Facilitator) के रूप में व्याख्यान देने से शिक्षक-शिक्षकों के व्यावसायिक विकास, आत्मविश्वास तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
7. व्यावसायिक संघों, संपादकीय मंडलों, शैक्षणिक परिषदों तथा अन्य शैक्षिक निकायों की सदस्यता ने शिक्षक-शिक्षकों के मध्य नेटवर्किंग के अवसरों तथा शैक्षणिक सहभागिता को सुदृढ़ किया।
8. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) आधारित कक्षाएँ, इंटरनेट कनेक्टिविटी, ऑनलाइन शोध पत्रिकाएँ, डिजिटल संसाधन तथा ई-सामग्री (E-content) का विकास व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहित करने वाले प्रमुख अवसंरचनात्मक एवं तकनीकी कारकों के रूप में उभरकर सामने आए।
9. ई-पाठशाला, पीजी-पाठशाला तथा INFLIBNET जैसे ऑनलाइन शिक्षण मंचों को सतत व्यावसायिक अधिगम के लिए अत्यंत उपयोगी संसाधनों के रूप में मान्यता प्राप्त हुई।
10. उन्नत शोध सुविधाओं, साहित्यिक चोरी (Plagiarism) जाँच सॉफ्टवेयर तथा विशिष्ट शोध उपकरणों की सीमित उपलब्धता को व्यावसायिक विकास में बाधा उत्पन्न करने वाली प्रमुख चुनौती के रूप में पहचाना गया।

संदर्भ सूची

[1] डोनाल्डसन, जी., स्कॉटलैंड का भविष्य: शिक्षण, एडिनबर्ग, यू.के.: स्कॉटिश सरकार, 2011।

[2] ड्रेज, के., "व्यावसायिक विकास: इलिनॉयस करियर और तकनीकी शिक्षा शिक्षकों के लिए निहितार्थ," जर्नल ऑफ करियर एंड तकनीकी एजुकेशन, खंड 25, संख्या 2, पृ. 24–37, 2010।

[3] अर्ली, पी. एवं एस. बब्ब, सतत व्यावसायिक विकास का नेतृत्व और प्रबंधन, लंदन, यू.के.: SAGE पब्लिकेशन्स, 2004।

[4] एड्युटोपिया, "शिक्षक विकास महत्वपूर्ण क्यों है? क्योंकि छात्रों को सर्वश्रेष्ठ का अधिकार है," 2008।

[5] इवांस, एल., "पेशेवरता, व्यावसायिकता और शिक्षा पेशेवरों का विकास," ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, खंड 56, संख्या 1, पृ. 20–38, 2008। DOI: 10.1111/j.1467-8527.2007.00392.x

[6] फर्नांडेज़-मानज़ानाल, आर. एट अल., "प्रारंभिक व्यावसायिक विकास में पर्यावरणीय व्यवहार," जर्नल ऑफ क्लीनर प्रोडक्शन, खंड 108, पृ. 830–840, 2015। DOI: 10.1016/j.jclepro.2015.08.086

[7] फिशमैन, ई. जे. एट अल., "एक अभ्यास-आधारित व्यावसायिक शिक्षण कार्यक्रम," जर्नल ऑफ साइंस टीचर एजुकेशन, खंड 30, संख्या 1, पृ. 1–24, 2019। DOI: 10.1080/1046560X.2018.1532260

[8] फ्रंटियर्स इन एजुकेशन, "सक्रिय शिक्षण समाकलन के लिए कार्यस्थल-आधारित सतत व्यावसायिक विकास," फ्रंटियर्स इन एजुकेशन, खंड 9, आर्टिकल संख्या 1407542, 2024। DOI: 10.3389/feduc.2024.1407542

[9] गैंसर, टी., "व्यावसायिक विकास का महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण," जर्नल ऑफ यूरोपियन इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग, खंड 22, संख्या 9, पृ. 375–387, 2000। DOI: 10.1108/03090590010377269

[10] गैजसेल, एफ. पी. एट अल., “शिक्षक के मनोवैज्ञानिक कारकों का प्रभाव,” द एलीमेंट्री स्कूल जर्नल, खंड 109, संख्या 4, पृ. 406–427, 2009। DOI: 10.1086/593940

[11] जेल्डेनहुइस, जे. एल. एवं एल. सी. ऊस्टहुइजेन, “सतत व्यावसायिक विकास में शिक्षकों की भागीदारी को प्रभावित करने वाली चुनौतियाँ,” टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन, खंड 51, पृ. 203–212, 2015। DOI: 10.1016/j.tate.2015.07.006

[12] गिब्स, जी., बड़ी कक्षाओं में प्रभावी शिक्षण, मैडेनहेड, यू.के.: ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011।

[13] गिल, पी. के. एवं एच. कौर, “वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन,” इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एजुकेशन एंड रिसर्च, खंड 2, संख्या 4, पृ. 253–257, 2017।

[14] भारत सरकार, शिक्षा पर बजटीय व्यय का विश्लेषण (2010–11), नई दिल्ली: MHRD, 2014।

[15] हार्ग्रिव्स, ए., “पेशेवरता और व्यावसायिक शिक्षण के चार युग,” टीचर्स एंड टीचिंग, खंड 6, संख्या 2, पृ. 151–182, 2000। DOI: 10.1080/713698714

[16] हातिम, एम. एवं एम. शाकिर, “माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता,” एजुकेशनल क्वेस्ट, खंड 12, संख्या 1, पृ. 29–35, 2021।

[17] हेबा अल-ओमारी, एस. एट अल., “सतत व्यावसायिक विकास गतिविधियों से सीखने को अभ्यास में लागू करना,” बीएमसी मेडिकल एजुकेशन, खंड 24, आर्टिकल संख्या 261, 2024। DOI: 10.1186/s12909-024-05108-7

[18] इंगर्सोल, आर. एम. एवं ई. मेरिल, “पेशे के रूप में शिक्षण की स्थिति,” स्कूल्स एंड सोसाइटी, 2011।

[19] जैन, एम. उच्च शिक्षा अकादमिकों के दृष्टिकोण और कार्य प्रतिबद्धता का अध्ययन, पीएच.डी. शोध प्रबंध, SJPJT विश्वविद्यालय, राजस्थान, भारत, 2013।

[20] जोसेफ, आर. एस., “प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता,” इंडियन एजुकेशनल एब्स्ट्रैक्ट्स, खंड 4, संख्या 1, 2003।